भूमिका

मोहनदास नैमिशराय उन लेखकों में हैं, जो अपने साहित्य में उन विषयों, मुद्दों को समाहित करते हैं जो हाशिये पर ढकेल दिये गये हैं। इन्होंने ज्यादातर दलित साहित्य को प्रमुखता से रेखांकित किया हैं, लेकिन दलितों की तरह स्त्रियों को इस समाज ने कैसे परम्परा से शोषित तथा वंचित रखा हैं, आज इस देश की आधी-आबादी को जीवन-यापन करने के लिए जद्दोजहद करनी पढ़ती हैं। क्यों इस आधी-आबादी का कुछ हिस्सा उन तंग गलियों, कोठों पर भटकने के लिए विवश हैं, इन सभी समस्याओं को यथार्थ रूप में नैमिशराय ने बहुत करीब से स्वयं अनुभव किया हैं इसलिए उनके साहित्य में इन वंचित तथा हाशिये के समाज के लोगों की समस्या मुखर होकर सामने आती हैं।

देह व्यापार की राजनीति हमारे देश में प्राचीनकाल से चल रही हैं राजा, महाराजा, देवता आदि सभी स्त्रियों को अपने अधिकार की वस्तु समझकर भोगते थे। देव अपने आस-पास अनेक दासियाँ, रानियाँ, नृत्य करने वाली रखते थे। राजा, महाराजा कई-कई रानियाँ, पटरानियां तथा अपने हरम में सैकड़ों की संख्या में औरतों को रखते थे। मध्यकाल के इतिहास में ऐसे कितने उदाहरण मिल जायेगें जहाँ सुन्दर स्त्री को पाने के लिये युद्ध हुए। रानियों को तथा अन्य घरों की सुन्दर स्त्रियों को उठाकर ले जाते थे। यह उस समय की संस्कृति थी जहाँ स्त्री को जीत कर हासिल करने की परम्परा थी, क्योंकि समाज पुरुष प्रधान था लेकिन आज भी ज्यादा कुछ नहीं बदला आज जीत कर नही बल्कि आज खरीद कर ले जाया जाता हैं।

जैसे आज आधुनिककाल में भी देखते हैं, स्त्री के खरीद-परोख्त का व्यापार इतना वैश्विकृत हो चुका हैं, कि इसके कई रूप मिलते हैं, एक परम्परागत जो कोठे, वेश्यालयों पर जाकर खरीदारी की जाती हैं। एक आधुनिक तरीके से इंटरनेट, समाचार पत्रों के विज्ञापनों आदि के माध्यम से देह व्यापार करते हैं।

.....आशुतोष